रविवार 23 अगस्त, 2026

विषय — मन

स्वर्ण पाठ: 1 कुरिन्थियों 2: 12

"परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: कुलुस्सियों 2: 6-10

6 सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो।
7 और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो॥
8 चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न करे ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार हैं, पर मसीह के अनुसार नहीं।
9 क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।
10 और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. फिलिप्पियों 2: 5, 12, 13

5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।
12 इस कारण, मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।
13 क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

2. मत्ती 2: 1 (यीशु) (से *1st* ,)

1 हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ,

3. लूका 2: 40-43, 46, 47, 52

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

40 और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।
41 उसके माता-पिता प्रति वर्ष फसह के पर्व में यरूशलेम को जाया करते थे।
42 जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए।
43 और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे, तो वह लड़का यीशु यरूशलेम में रह गया; और यह उसके माता-पिता नहीं जानते थे।
46 और तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उन की सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया।
47 और जितने उस की सुन रहे थे, वे सब उस की समझ और उसके उत्तरों से चकित थे।
52 और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया॥

4. मत्ती 11: 1

1 जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥

5. मत्ती 12: 22-28

22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?
24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।
25 उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा?
27 भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।
28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।

6. लूका 8: 22 (से :), 26-35 (से :)

22 फिर एक दिन वह और उसके चेले नाव पर चढ़े, और उस ने उन से कहा; कि आओ, झील के पार चलें: सो उन्होंने नाव खोल दी।
26 फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जो उस पार गलील के साम्हने है।
27 जब वह किनारे पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिस में दुष्टात्माएं थीं और बहुत दिनों से न कपड़े पहिनता था और न घर में रहता था वरन कब्रों में रहा करता था।

28 वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके साम्हने गिरकर ऊंचे शब्द से कहा; हे परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या काम! मैं तेरी बिनती करता हूं, मुझे पीड़ा न दे!
29 कि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था, इसलिये कि वह उस पर बार बार प्रबल होती थी; और यद्यपि लोग उसे सांकलों और बेडिय़ों से बांधते थे, तौभी वह बन्धनों को तोड़ डालता था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाये फिरती थी।
30 यीशु ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उसने कहा, सेना; क्योंकि बहुत दुष्टात्माएं उसमें पैठ गईं थीं।
31 और उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे।
32 वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें उन में पैठने दे, सो उस ने उन्हें जाने दिया।
33 तब दुष्टात्माएं उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में गईं और वह झुण्ड कड़ाडे पर से झपटकर झील में जा गिरा और डूब मरा।
34 चरवाहे यह जो हुआ था देखकर भागे, और नगर में, और गांवों में जाकर उसका समाचार कहा।
35 और लोग यह जो हुआ था उसके देखने को निकले, और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्माएं निकली थीं, उसे यीशु के पांवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए।

7. रोमियो 8: 1-7, 11, 14-17 (से *2nd* ;)

1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।
5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
11 लेकिन यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।
14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।
15 क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।
16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

[17] और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 591: 16 (मन।)-19 (से ;)

मन। केवल मैं, या हम; एकमात्र आत्मा, जीवन, दिव्य सिद्धांत, पदार्थ, जीवन, सत्य, प्रेम; एक ईश्वर; वह नहीं जो मनुष्य में है, लेकिन ईश्वरीय सिद्धांत या ईश्वर, किसका मनुष्य पूर्ण और परिपूर्ण अभिव्यक्ति है;

2. 256: 32-3

अनंत मन ही बनाने वाला है, और रचना इस मन से निकलने वाली अनंत छवि या विचार है। अगर मन सभी चीज़ों के अंदर और बाहर है, तो सब कुछ मन ही है; और यह परिभाषा वैज्ञानिक है।

3. 302: 19-24

मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

4. 507: 15-8

आत्मा का ब्रह्मांड ईश्वरीय सिद्धांत या जीवन की रचनात्मक शक्ति को दर्शाता है, जो मन के बहुसंख्यक रूपों को पुन: उत्पन्न करता है और यौगिक विचार मनुष्य के गुणन को नियंत्रित करता है। पेड़ और जड़ी-बूटी अपनी स्वयं की किसी प्रसार शक्ति के कारण फल नहीं देते हैं, बल्कि इसलिए कि वे उस मन को प्रतिबिंबित करते हैं जिसमें सभी शामिल हैं। एक भौतिक दुनिया का अर्थ है एक नश्वर मन और मनुष्य एक निर्माता। वैज्ञानिक ईश्वरीय रचना अमर मन और ईश्वर द्वारा निर्मित ब्रह्मांड की घोषणा करती है।

अनंत मन, मेंटल मॉलिक्यूल से लेकर अनंत तक, सब कुछ बनाता और चलाता है। सबका यह दिव्य सिद्धांत अपनी रचना में विज्ञान और कला, और इंसान और ब्रह्मांड की अमरता को दिखाता है। रचना हमेशा दिखाई देती है, और अपने कभी न खत्म होने वाले स्रोत की प्रकृति से हमेशा दिखाई देती रहेगी। नश्वर समझ इस दिखने को उलट देती है और विचारों को भौतिक कहती है। इस तरह गलत मतलब निकालने पर, दिव्य विचार इंसान या भौतिक विश्वास के लेवल पर आ जाता है, जिसे नश्वर इंसान कहा जाता है। लेकिन बीज अपने आप में है, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि दिव्य मन ही सब कुछ है और सब कुछ दोबारा बनाता है—क्योंकि मन ही गुणक है, और मन का अनंत विचार, इंसान और ब्रह्मांड, प्रोडक्ट है। किसी विचार, बीज या फूल की एकमात्र बुद्धि या तत्व भगवान है, जो उसे बनाने वाला है। मन ही सबकी आत्मा है। मन ही जीवन, सत्य और प्रेम है जो सब कुछ चलाता है।

5. 204: 23-29

झूठी और आत्म-विश्वासपूर्ण सिद्धांतों ने पापियों को यह सोच दी है कि वे वह बना सकते हैं जो ईश्वर नहीं बना सकते,—अर्थात, ईश्वर की छवि में पापी इंसान, इस तरह ईश्वर के मन की छवि या झलक के स्वरूप के बिना उसके नाम पर कब्जा कर लेते हैं; लेकिन साइंस में यह कभी नहीं कहा जा सकता कि इंसान का अपना कोई मन है, जो ईश्वर, अर्थात पूरे मन से अलग हो।

6. 216: 11-18

यह समझ कि अहंकार मन है, और यह कि एक मन या बुद्धि है, एक बार में नश्वर अर्थ की त्रुटियों को नष्ट करने और अमर भावना की सच्चाई की आपूर्ति करने के लिए शुरू होता है। यह समझ शरीर को सामंजस्यपूर्ण बनाती है; यह तंत्रिकाओं, हड्डियों, मस्तिष्क इत्यादि को नौकरों के बजाय नौकर बनाता है। यदि मनुष्य दिव्य मन के नियम से संचालित होता है, तो उसका शरीर हमेशा की ज़िंदगी और सच्चाई और प्रेम को प्रस्तुत करने में है।

7. 151: 20-30

वास्तविक मनुष्य का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय मन द्वारा संचालित होता है। मानव मन को मारने या ठीक करने की कोई शक्ति नहीं है, और इसका भगवान के आदमी पर कोई नियंत्रण नहीं है। वह दिव्य मन जिसने मनुष्य को बनाया, वह अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है। मानव मन भगवान के विपरीत है और इसे बंद करना चाहिए, जैसा कि सेंट पॉल ने घोषित किया है। वह सब जो वास्तव में मौजूद है, वह दिव्य मन और उसका विचार है, और इस मन में संपूर्ण प्राणी सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाया जाता है। सीधे और संकीर्ण तरीके से इस तथ्य को देखना और स्वीकार करना है, इस शक्ति से उपजें, और सच्चाई के अग्रणी का पालन करें।

8. 234: 31-3

बुराई के विचार और उद्देश्य किसी भी हद तक नहीं पहुंचते हैं और किसी के विश्वास परमिट से अधिक नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। बुराई के विचार, वासना और दुर्भावनापूर्ण उद्देश्य आगे नहीं बढ़ सकते हैं, जैसे पराग को भटकाना, एक मानव मन से दूसरे में, असुरक्षित पोजिशन ढूंढना, अगर सद्गुण और सत्य एक मजबूत रक्षा का निर्माण करते हैं।

9. 180: 25-30

जब मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित होता है, सभी चीजों को समझने वाला वर्तमान मन मनुष्य जानता है कि भगवान के साथ सभी चीजें संभव हैं। इस जीवित सत्य का एकमात्र तरीका, जो बीमारों को चंगा करता है, ईश्वरीय मन के विज्ञान में पाया जाता है जैसा कि मसीह यीशु ने सिखाया और प्रदर्शित किया है।

10. 143: 26-5

मन ही सबसे बड़ा बनाने वाला है, और मन से मिली शक्ति के अलावा कोई शक्ति नहीं हो सकती। अगर मन समय के हिसाब से सबसे पहले था, शायद सबसे पहले है, और हमेशा सबसे पहले रहना ही चाहिए, तो मन को वह महिमा, सम्मान, दबदबा और शक्ति दो जो हमेशा उसके पवित्र नाम की वजह से है। इलाज के घटिया और गैर-आध्यात्मिक तरीके मन और दवाओं को मिलाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन दोनों साइंटिफिक तौर पर नहीं मिलेंगे। हम उन्हें ऐसा करने के लिए क्यों मजबूर करें, जब इससे कोई फायदा नहीं हो सकता?

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

अगर मन सबसे आगे और बेहतर है, तो हमें मन पर भरोसा करना चाहिए, जिसे नीचे की शक्तियों के सहयोग की ज़रूरत नहीं है, भले ही ये तथाकथित शक्तियां असली हों।

11. 231: 30-2

इंसान, अपने निर्माता की सरकार के अधीन रहकर, कोई दूसरा मन न रखकर,—इंजीलवादी की इस बात पर आधारित होकर कि "सब कुछ उसी [परमेश्वर के वचन] के द्वारा उत्पन्न हुआ ; और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई",—पाप, बीमारी और मौत पर जीत हासिल कर सकता है।

12. 191: 4-13

जैसे ही नश्वर इस भ्रम को छोड़ देते हैं कि एक से अधिक मन हैं, एक से अधिक ईश्वर हैं, ईश्वर की समानता में मनुष्य प्रकट होगा, और यह शाश्वत मनुष्य उस समानता में कोई भौतिक तत्व शामिल नहीं करेगा।

एक सामग्री के रूप में, सैद्धांतिक जीवन-आधार को अस्तित्व की गलत धारणा के रूप में पाया जाता है, मनुष्य का आध्यात्मिक और दिव्य सिद्धांत मानव विचार पर आधारित होता है, और इसे "जहां युवा बच्चा था," की ओर ले जाता है - यहां तक कि एक नए जन्म के लिए भी पुराना विचार, जीवन के आध्यात्मिक बोध और जिसमें जीवन शामिल है। इस प्रकार पूरी पृथ्वी सत्य के प्रकाश के पंखों पर, त्रुटि के अंधेरे का पीछा करते हुए बदल जाएगी।

13. 276: 1-11

एक ईश्वर, एक मन, उस शक्ति को प्रकट करता है जो बीमारों को चंगा करती है, और पवित्रशास्त्र की इन बातों को पूरा करती है, "मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं," तथा "मुझे छुड़ौती मिली है।" जब दिव्य उपदेशों को समझा जाता है, तो वे फेलोशिप की नींव को उजागर करते हैं, जिसमें एक मन दूसरे के साथ युद्ध में नहीं है, लेकिन सभी के पास एक आत्मा, भगवान, एक बुद्धिमान स्रोत है, जो कि इंजील कमांड के अनुसार है: "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" मनुष्य और उसके निर्माता का संबंध ईश्वरीय विज्ञान में है, और वास्तविक चेतना केवल ईश्वर की बातों के प्रति ही संज्ञान है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन

सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।